International Journal of Education and Science Research Review
E- ISSN 2348-6457
Volume-1, Issue-3 June- 2014 P- ISSN2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

शिक्षा में नेतृत्व प्रभाविता की उपयोगिता

मनीष कुमार शर्मा'
शोद्यार्थी,
श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबरेवाल विश्वविद्यालय,
विद्यानगरी, झुन्झुनू (राजस्थान)

सार
प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में कुछ–न–कुछ अनुभव अवष्य होते है जो समय के साथ–साथ बदलते रहते है इन्हीं अनुभवों से कुछ सिद्धान्त जन्म लेते है जो मानव व्यवहार को निर्देषित करते है। अतः ऐसे सिद्धान्त जो होने की कला को जन्म देते है तथा उसके जीवन को गत्यात्मक नेतृत्व प्रभाविता प्रदान करते है जिससे वह अपने विचारों, संवेगों एवं पर्यावरण के माध्यम से अपनाकर निष्चित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अपनी जीवन पद्धति का निर्माण करता है। साथ ही अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। प्राचीन समय में जहाँ गुरूकुल नहीं हुआ करते थे वहॉ बालक के विकास की जिम्मेदारी माता–पिता की हुआ करती थी। लेकिन आज माता–पिता दोनों ही व्यवसाय कार्य एवं पारिवारिक व्यस्तता में संलग्न रहते है। अतः अब बालक के सर्वांगीण विकास का कार्य स्थल विद्यालय बन गया है। जिसमें षिक्षक की सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। एक बालक में अर्न्तवैयक्तिक जागरूकता, अन्तःवैयक्ति जागरूकता, अर्न्तवैयक्तिक प्रबंधन एवं अन्तःवैयक्तिक प्रबंधन हेतु विद्यालय एवं षिक्षक का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।

प्रस्तावना
अनेक लोग सोचते हैं कि अमुक व्यक्ति जन्मजात महान था। लोगों का ऐसा सोचना आंशिक रूप से ही सही होता है। उनकी ऐसी दुर्बल सोच उनकी परिपक्वता तथा आत्मविश्वास की हीनता के कारण ही बनती है। वास्तविकता तो यह है कि अच्छा व्यक्तित्व बनाने में कुछ गुण सहायक होते हैं। अगर कम गुण हैं तो उनको अच्छी संगति व अच्छे मार्गदर्शन से विकसित किया जा सकता है।कुछ ऐसे गुण अवश्य होते हैं जिन पर व्यक्ति का नियंत्रण नहीं होता है, फिर भी उनको नियंत्रित करके विकसित तो किया ही जा सकता है। इसके लिए पहले यह स्मरण रखना होगा कि आप स्वयं ही अपने व्यक्तित्व के निर्माता हैं और जो कुछ आपको करना है, स्वयं ही करना है। तभी आपके अन्दर आत्म–विश्वास में अभिवृद्धि होगी। आत्म विश्वास की बढ़ती भावना व उमंग से आप अपने लक्ष्य को सरल ढंग से प्राप्त कर लेंगे।

नेतृत्वकर्ता का वह व्यवहार जो समूह के सदस्यों के व्यवहार की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली एवं कुशलतापूर्ण है, नेतृत्व प्रभाविता कहलाता है। जिसके द्वारा समूह के सदस्यों को प्रोत्साहित, निर्देशित और नियंत्रित किया जाता है। नेतृत्व प्रभाविता अभिप्रेरणा की

वह कला है जिसके द्वारा व्यक्तियों का समूह सामान्य उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास करता है। नेतृत्व किसी क्रिया का प्रेरक निर्देशक होता है जो कौशल एवं व्यक्तित्व के अलग–अलग गुणों के साथ सन्तुलन स्थापित कर लेता है जिससे दूसरे उसके निर्देशन का अनुकरण कर सकें।

नेतृत्व प्रभाविता समूह को प्रेरित करती है। नेतृत्व प्रभाविता द्वारा योजनाओं का क्रियान्वयन किया जाता है। नेतृत्व प्रभाविता का स्तर समूह की प्रभाविता को चुनौती देता है। नेतृत्व प्रभाविता द्वारा नेतृत्व के विश्वास को बढ़ाया जा सकता है।

नेतृत्व प्रभाविता उस स्थिति को माना जाता है, जिसमें किसी वर्ग, समाज अथवा संस्थान का कोई व्यक्ति अपने विशिष्ट गुणों और समर्थ योजनाओं के कारण प्रमुखता प्राप्त कर लेता है और शेष सभी लोग उसके सुझावों, निर्देशों एवं योजनाओं का अनुकरण मात्र करते हैं। प्रत्येक समूह की अपनी समस्याएँ होती हैं, जिन्हें समूह का प्रत्येक सदस्य सुलझाने व समझाने में समर्थ नहीं होता है। ऐसा व्यक्ति इन समस्याओं को सुलझाने व समझाने में समर्थ होता है। ऐसे समूह के सदस्यों को रक्षक के रूप में दिखाई देते हैं, समूह के सदस्य समस्या का समाधान करने वाले व्यक्ति के निकट एकत्र होने लगते हैं और उनके निर्देशानुसार कार्य करने को तत्पर रहते हैं। इसी के साथ किसी व्यक्ति में नेतृत्व प्रभाविता प्रारम्भ हो जाती है।

मायर्स ने निम्नलिखित व्यक्तिगत गुणों का नेतृत्व प्रभाविता के साथ धनात्मक सम्बन्ध बताया है –

(1) अन्तर्दृष्टि (2) लगातार लगे रहना

(3) अगुवाई करना (4) सहयोग करना

(5) निर्णय शक्ति (6) मौलिकता

(7) लोकप्रियता (8) महत्वाकांक्षी

(9) सम्प्रेषण कौशल (10) संवेगात्मक स्थिरता

स्टोगडिल ने नेतृत्व प्रभाविता के अन्तर्गत नेतृत्वकर्ता के निम्नलिखित गुणों को सम्मिलित किया जाता है –

(1) उच्च स्वास्थ्य, व्यक्तिगत शक्ति तथा शारीरिक प्रभाविता या सहनशक्ति।

(2) जोशीला एवं उत्साही तथा आत्मविश्वास।

(3) दूसरों में रूचि रखना, मित्रता के भाव से पूर्ण।

(4) अच्छी सामान्य तर्क शक्ति एवं विचार, आवश्यक सूचनाओं के आवश्यक तत्वों को तुरन्त समझने की योग्यता तथा ज्ञान का उपयोग करने की प्रभाविता।

(5) सत्यनिष्ठता, नैतिक कर्त्तव्य का बोध तथा निष्पक्ष।

(6) प्रभावपूर्ण तथा विश्वास प्राप्त करने की समर्थता, दूसरों को जीतने की प्रभाविता।

(7) न्यायप्रियता, कार्य करने वाले व्यक्ति की कमजोरियों एवं सामर्थ्य को जानने की प्रभाविता, इसी के साथ यह जानना कि उनका अधिकतम उपयोग कैसे किया जा सकता है।

(8) कर्त्तव्यनिष्ठता एवं समर्पण, समूह का बाह्य प्रभावों से बचने का इच्छुक तथा साथ कार्य करने वाले व्यक्तियों के प्रति लगाव।

इस प्रकार नेतृत्व प्रभाविता किसी अकादमिक संस्था की रीढ़, उसकी शक्ति और परिसम्पत्ति होता है। विचारों, भावनाओं और व्यवहारों की मुक्त अभिव्यक्ति का वातावरण बनाना और इसे संजोकर रखा जाना चाहिए। स्वतंत्रता के साथ–साथ दायित्व और आत्म–समीक्षा के गुण भी निश्चित रूप से जुड़े होते हैं। अतः किसी व्यक्ति को जितनी अधिक स्वतंत्रता प्राप्त होती है, उसका दायित्व भी उतना ही अधिक होता है। इस प्रकार संस्था को अपनी स्वतंत्रता का उपयोग उतने ही उत्तरदायित्व और आत्मानुशासन के साथ करना चाहिए जिससे नेतृत्व प्रभाविता का विकास हो सके। कुशल नेतृत्व के कारण समूह संगठित रहता है तथा उन्नति करता है जबकि अकुशल नेतृत्व से यह बिखर भी सकता है। सुयोग्य नेतृत्व से संस्था प्रगति करती है, जिससे संस्था के सहयोगी सदस्य अपने कार्य से संतुष्ट रहते हैं, फलस्वरूप उनमें परस्पर मधुर सम्बन्ध बने रहते हैं, जो संस्था को स्थायी दृढ़ता प्रदान करते हैं।

नेतृत्व प्रभाविता के द्वारा प्राचार्यो, संस्था प्रधानों, प्रबंधकों, प्रशासकों एवं विद्यार्थियों में सामाजिक बुद्धिमता, संवेगात्मक स्थिरता, परिस्थिति की सही समझ, दायित्व बोद्य, धेर्य, निर्णय शक्ति एवं नैतिक मूल्यों का विकास होता है। जिससे वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में व्यापक सुधार लाया जा सकता है। इसलिए वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में नेतृत्व प्रभाविता की उपयोगिता स्वयं सिद्ध होती है।

References :

1. Bass, B. M. : Leadership and Performance beyond Expectations, Free Press, New York, 1985
2. Daloz Parks, S.: Leadership can be taught: A bold approach for a complex world. Cambridge: Harvard Business School Press, 2005.
3. Elias, M. J., Arnold, H., and Hussey, C. S. : EQ + IQ = Best leadership Practices for Caring and Successful Schools, Corwin Press, Thousand Oaks, CA, 2003
4. Feldman, D. A. : The Handbook of Emotionally Intelligent Leadership: Inspiring Others to Achieve Results, Leadership Performance Solutions Press, Falls Church, VA, 1999
5. Yukl, Gary : Leaderhip in Organizations (6th ed.). Upper Saddle River, NJ: Pearson, Printice Hall, 2006.